प्रमुख हिन्दू देवता

(प्रतिमा और प्रतीक)

संकल्पना

ब्रह्म अग्रवाल

प्रकाशक

हिन्दू यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका

प्रकाशक:

हिन्दू यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका

११३ नॉर्थ इकोनलोकहैटची ट्रेल
ओरलैन्डो, फ्लोरिडा ३२८२५
www.hua.edu staff@hua.edu ४०७-२७५-००१३

© हिन्दू यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका

इस पुस्तक को पूरी तरह या आंशिक तौर पर प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी इलैक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा ज्ञान-संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में न कहीं पुनरुत्पादित किया जाए न प्रेषित या प्रस्तुत किया जाए।

सौजन्य:

पार्क स्कूएर होमस्

ओरलैन्डो में भू एवं गृह विकास में अभियोजित पारिवारिक कम्पनी
www.ParkSquareHomes.com
www.NowRentMe.com

मुद्रक:

ऋचा प्रकाशन

धार्मिक एवम् योग की पुस्तकों के प्रकाशक
डी-३६, साउथ एक्सटैंशन भाग-एक, नई दिल्ली-११००४९ (भारत)
www.richaprakashan.com info@richaprakashan.com (०११)-२४६४०१५३

आपके सुझावों का प्रकाशक स्वागत करते हैं।

देवों के प्रतीक अर्थ

भारत में जितने भी देवता हैं, उन सभी के प्रतीक अर्थ हैं। ये अर्थ किसी वस्तु, व्यक्ति, घटना तथा किसी विचार आदि से जुड़े होते हैं। चाहे वह लिखा जाने वाला नाम हो, या बोला जाने वाला। यहाँ तक कि चित्रात्मक भाषा भी! ये सभी उस भाषा के जानकार व्यक्तियों को किसी वस्तु की जानकारी देते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रतीकों के अर्थ का सीधा संबंध भाषा और संस्कृति से होता है।

किसी भी प्रतीक का क्या अर्थ होगा, यह उस भाषा के बोलने और सुनने वाले पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए किसी हिन्दू के लिए स्वास्तिक एक पवित्र चिह्न है, जबकि एक यहूदी को यही नाज़ीवाद का चिह्न दिखाई देता है। कृष्ण भक्त को गाय में कृष्ण दिखाई देंगे, लेकिन दूसरों को उसमें मातृ–पशु दिखाई देगा। प्रतीकों के अर्थ स्थान पर भी निर्भर करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी मकान पर लगा हुआ क्रॉस का चिह्न चर्च का अर्थ देता है, जबकि यदि वही चिह्न जमीन पर हो, तो वह कब्रिस्तान को बताता है। यदि यही क्रॉस उत्तर पुस्तिका में लगा हुआ हो, तो इसका अर्थ हो जायेगा कि लिखा गया उत्तर गलत है।

हिन्दू धर्मग्रंथ बार–बार इस बात पर जोर देते हैं कि तुम वही हो, जो वह है– 'तत् त्वम् असि'। 'वह' यानी 'परम तत्व'। सभी कर्मकाण्ड, पूजा, प्रार्थना, ध्यान, योग, मंत्र, वेदांत तथा सेवाकार्य आदि इसी उद्देश्य से बनाये गये हैं कि व्यक्ति अपने निजी विश्वासों से ऊपर उठकर उस परम तत्व को जानकर उससे एकाकार हो सके। इस परमतत्व को आप भगवान या ऐसा कुछ भी कह सकते हैं।

देवी–देवताओं के प्रतीक का अर्थ है–इनकी पूजा–अर्चना के तौर–तरीकों में निहित वस्तुओं को जानकर उन्हें अपने जीवन में उतारना। हिन्दू एक ही परमसत्य की आराधना करते हैं। यह बात अलग है कि उस परमसत्य के रूप अनेक होते हैं, तथा वह निराकार भी हो सकता है। ये देवी–देवता ईश्वर की अनेक शक्तियों और गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि हमें श्रृंगार, हाथ में धारण की गई वस्तुओं, उनकी आसपास की वस्तुओं, उनके वाहन आदि का उचित ज्ञान हो जाता है, तो इससे हमें उनके साथ अच्छी तरह जुड़ने तथा अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद मिलती है। अंततः जब हम इनके बारे में उचित प्रकार से समझ जाते हैं, तब पता चलता है कि ये वही शक्तियाँ और गुण हैं, जो हममें ही मौजूद हैं। ये हमारी अपनी आत्मा के ही गुण हैं। प्राण, मस्तिष्क, शरीर एवं ज्ञान पर समुचित नियंत्रण, प्रशिक्षण और अभ्यास के द्वारा हम स्वयं की खोज कर सकते हैं।

देवी–देवताओं के चित्रों अथवा मंदिरों की अपनी–अपनी श्रद्धा, अपने–अपने धर्म और मनःस्थितियों के अनुसार व्याख्या की जा सकती है। ज्ञान, भक्ति, कर्म और विभिन्न विचारों को मानने वाले लोगों के लिए इन प्रतीकों के अलग–अलग अर्थ होते हैं, और इससे तब तक कोई अंतर नहीं पड़ता, जब तक हमें उनसे अपने उत्थान में मदद मिलती है। एक तरफ प्रतीकों के बहुत ही सामान्य अथवा परम्परावादी अर्थ हो सकते हैं, तो गहन रहस्यवादी एवं आध्यात्मिक व्याख्या भी। इनमें से सही कौन से हैं? जिस अर्थ से हमारा आध्यात्मिक विकास होता हो, और जो हमें एक उत्तम मानव बनाता हो, वही हमारे लिए सही व्याख्या है।

लोग मूर्ति, प्रतीक या चित्रों की पूजा नहीं करते। लोग इन सबका उपयोग अपनी चेतना को केन्द्रित करने के लिए करते हैं, अथवा इसलिए करते हैं, जिससे वे अपनी मानसिक शक्तियों को जागृत करके अपने नकारात्मक गुणों एवं आदतों को खत्म कर सकें। जिस प्रकार एक राष्ट्रीय ध्वज हममें राष्ट्रभक्ति की भावना पैदा करता है, उसी प्रकार एक मूर्ति हमारे अंदर के गुणों को हममें पैदा करती है। भारत में 33 करोड़ देवताओं की कल्पना महज एक रूपक है, जो बताती है कि ईश्वर के विषय में असंख्य तरीकों से सोचा जा सकता है, और प्रत्येक देवता में कुछ विशेष गुण होते हैं। ये विभिन्न देवता न तो पूरी तरह स्वतंत्र हैं, और न ही एक–दूसरे के विरोधी, बल्कि सभी एक ही सर्वोच्च सत्ता के अधीन हैं। इस पुस्तिका में हिन्दुओं द्वारा पूजे जाने वाले कुछ लोकप्रिय देवी–देवताओं के प्रतीक अर्थों की जानकारी दी गई है। हमें विश्वास है कि जब भी आप पूजा, प्रार्थना और ध्यान करेंगे, उस समय ये आपकी अवश्य सहायता करेंगे।

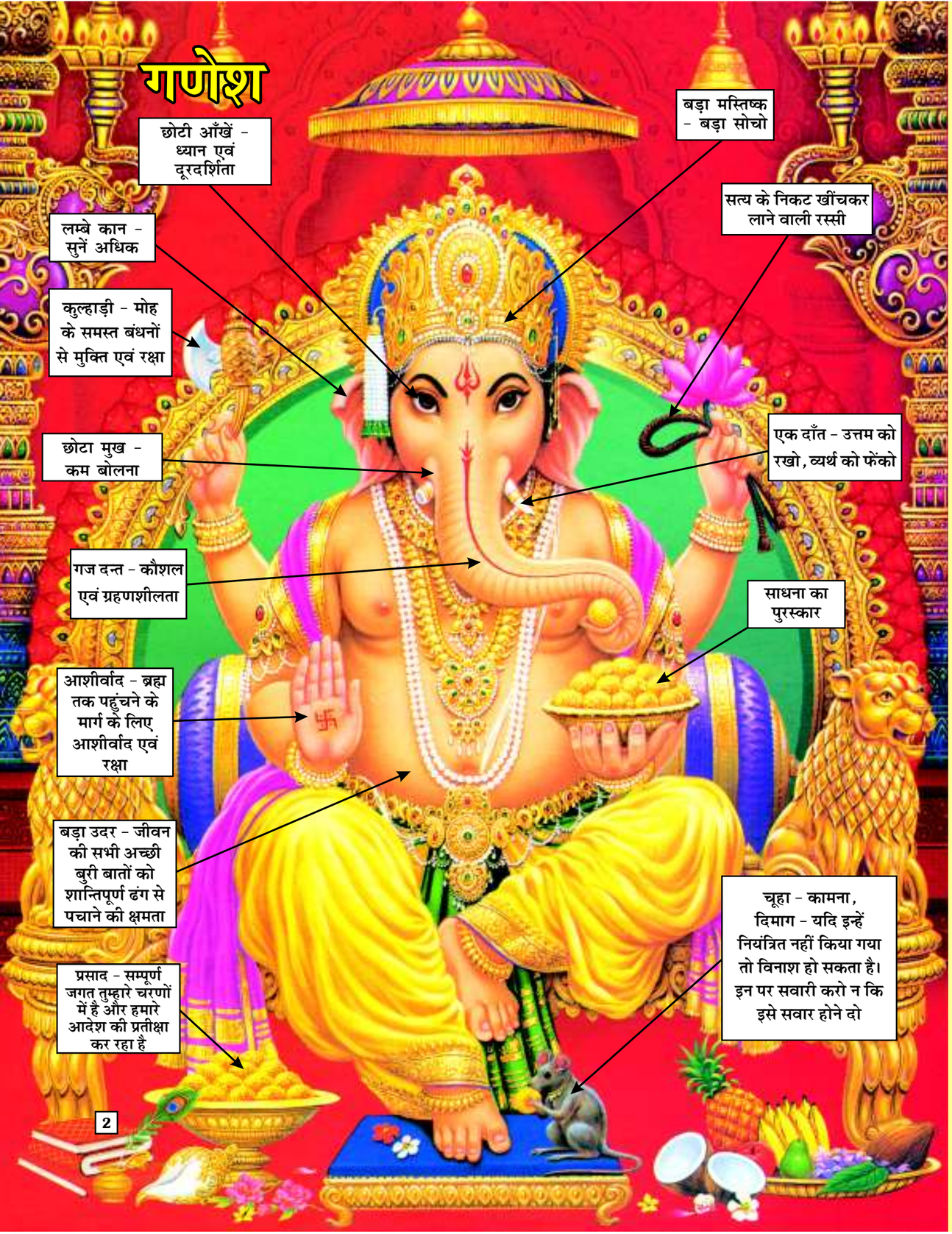

गणेश

गणेश के कई अन्य नाम भी हैं, जैसे विनायक (ज्ञानी), विघ्नेश्वर (विघ्न का नाश करने वाले), गजानन (हाथी के मस्तक वाला) और गणपति (नेतृत्वकर्ता)। गणेश में नेतृत्व की क्षमता है, और ऐसा विश्वास है कि उनकी कृपा होने पर किसी भी काम में सफलता मिल जाती है।

गणेशजी का हाथी का मस्तक उनकी तीव्र बुद्धि और विशाल चिंतन का प्रतीक है। हाथी का जीवन प्रफुल्लता से पूर्ण होता है, जो गरिमा और आत्म-सम्मान की भावना से आती है। हाथी भोजन करते समय सामग्री को अपने चारों ओर बिखेरता है। यह उसकी उदार भावना को व्यक्त करता है। उसके बड़े कान और मुँह हमें बताते हैं कि 'कम बोलो, अधिक सुनों, और जो कुछ भी अच्छा एवं रचनात्मक हो, उसे ही अपने पास रखो।' बड़े कान अपने गुरु की बातों को ध्यान से सुनने का भी अर्थ देते हैं। छोटी आँखों का अर्थ है–तीक्ष्ण दृष्टि, केन्द्रीयता तथा दूरदर्शिता। गणेश के दाँत उच्च शक्ति, कौशल एवं ग्रहणशीलता के प्रतीक हैं। वे जहाँ अपने दाँतों से बड़ी से बड़ी बाधा को दूर कर सकते हैं, वहीं कोमल काम को भी बहुत ही सावधानी से कर सकते हैं। गणेश के बड़े दाँतों के और भी गहरे अर्थ लगाये जाते हैं। उनके छोटे दाँत बुद्धिमत्ता का, तो बड़े दाँत आस्था का प्रतीक माने जाते हैं। जीवन में उन्नति के लिए बुद्धिमत्ता और आस्था दोनों की आवश्यकता होती है। अक्सर बुद्धिमत्ता जीवन के ज्वलंत प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थ हो जाती है। जब भी ऐसा होता है, तब ईश्वर में एवं स्वयं में आस्था ही हमें सफल जीवन की ओर ले जाती है।

- अंकुश– यह दर्शाता है कि हम स्वयं को हर प्रकार के मोह के बंधनों से अलग कर लें तथा अपनी इच्छाओं और भावनाओं को नियंत्रण में रखें।
- पाश– यह संयम एवं दण्ड का प्रतीक है। इससे हम सत्य के निकट पहुँचते हैं।
- मोदक– लड्डू ऊपर से कठोर किन्तु अंदर से मीठा और पौष्टिक होता है। इसका अर्थ है कि कठिन श्रम से आनंद, संतोष एवं आत्मा को खुराक मिलती है।
- आशीर्वाद– यह इस तथ्य का संकेतक है कि गणेशजी का आशीर्वाद हमें आध्यात्मिक मार्ग पर आगे ले जाता है, और हमारी रक्षा करता है।

एक सम्पूर्ण व्यक्ति में यह गुण होना चाहिए कि वह अपने जीवन के समस्त अनुभवों को पचा सके। गणेशजी का बड़ा पेट जीवन की सारी अच्छी और बुरी बातों को पचाने में सक्षम है। वह भी बिना नियंत्रण खोये। उनके छोटे पैर संदेश देते हैं कि किसी भी काम के लिए हड़बड़ी में मत जाओ। हमारा प्रत्येक कदम धीमा और अच्छी तरह सोचा-समझा हुआ होना चाहिए।

सुगंधित भोजन सामग्री के पास बैठा हुआ मूषक (चूहा) गणेशजी की ओर देख रहा है। वह थोड़ा भयभीत है और गणेशजी की अनुमति के बिना किसी भी चीज को छूने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है। हालांकि चूहा होता तो एक छोटा सा ही जीव है, और उसके दाँत भी छोटे ही होते हैं। लेकिन वह अपनी कुतरने की क्षमता के कारण विनाश ला सकता है। ठीक इसी तरह हम सभी के व्यक्तित्व के अंदर कामनारूपी चूहा रहता है, जो पर्वत जितने गुणों को भी कुतरकर खत्म कर सकता है। गणेशजी ने चूहारूपी कामना की विध्वंशकारी शक्ति पर इस प्रकार नियंत्रण कर लिया है कि वह पूरी तरह से अपने स्वामी के आदेश के अनुसार काम करता है।

दुर्गा

इनके अन्य नाम हैं– काली, भवानी, अम्बा, जगदम्बा, सिंहवाहिनी, शेरांवाली, पार्वती तथा अन्य सैकड़ों नाम।

दुर्गा का शाब्दिक अर्थ होता है– अत्यंत विशाल या अगम्य। काली के रूप में वे क्रोध एवं भय का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे केवल उनको भयभीत करती हैं, जो दुष्कर्मों एवं आसुरी कार्यों में लगे हुए हैं। अम्बा अथवा पार्वती के रूप में वे अच्छे लोगों एवं भक्तों के लिए प्यारी माँ हैं। दुर्गा के रूप में वे हम सब में निहित वह आध्यात्मिक ऊर्जा हैं, जिसको सही प्रकार से जागृत एवं उपयोग करने से सभी नकारात्मक वृत्तियां खत्म हो जाती हैं। यह ऊर्जा निश्चित रूप से काम करती है।

दुर्गाजी को कभी शेर पर तो कभी सिंह पर बैठे हुए दिखाया जाता है। प्रायः उनके आठ, किन्तु कभी–कभी दस और अठारह हाथ होते हैं। हाथों में अस्त्र–शस्त्र भी होते हैं। त्रिशूल, तलवार, धनुष–बाण, गदा, चक्र आदि सभी अस्त्रों का उपयोग परिस्थितियों के अनुसार किया जाता है। ये सभी हमारे अंदर छिपी अनेक शक्तियों एवं क्षमताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनसे हम अपने अंदर की नकारात्मकता को समाप्त करके सकारात्मकता को आगे बढ़ा सकते हैं।

शेर और सिंह हमारे अंदर की अनियंत्रित पशुवृत्तियों का अर्थ देते हैं जैसे कि क्रोध, अहंकार, लोभ, ईर्ष्या, पूर्वाग्रह तथा दूसरों को हानि करने की वृत्ति आदि। यदि इन वृत्तियों को संयमित न किया जाये, तो ये हमारी आत्मा को नष्ट करके हमें नुकसान पहुँचाती हैं। इन वृत्तियों को पूर्ण दृढ़ता तथा ठोस प्रयासों के द्वारा पहले तो नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है, फिर इन्हें सकारात्मक गुणों में परिवर्तित किया जाता है। दुर्गा के हाथों के अस्त्र–शस्त्र हमारी इन हानिकारक वृत्तियों को नियंत्रित करने की तीव्र रणनीति एवं कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बाद में ये पशुवृत्तियां आनंददायी और लाभकारी वृत्तियों में परिवर्तित हो जाती हैं। मस्तिष्क का एक शांत शेर अथवा सिंह के रूप में होना, एक अद्‌भुत बात है।

शंख का बजाया जाना श्रद्धालुओं को यह आश्वासन देना है कि दुर्गा के इस भयंकारी स्वरूप से डरने की आवश्यकता नहीं है। साथ ही इससे दुष्टों के मन में भय भी उत्पन्न किया जाता है। हमारे जीवन में यह आश्वासन किसी गुरू, किसी ग्रन्थ तथा किसी गहरी श्रद्धा की भावना से आता है।

दुर्गा का एक उठा हुआ हाथ दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध युद्ध में हमारी जीत का आश्वासन है। दूसरे शब्दों में इस मुद्रा के माध्यम से बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रति हमारे अपने विश्वास को व्यक्त किया जाता है।

हाथ में धारण कमल पवित्रता एवं पूर्णता का प्रतीक है। हालांकि बाह्य रूप में दुर्गा भले ही भयंकारी जान पड़ती हैं, लेकिन उनमें शत्रुता बिल्कुल नहीं है। वे अपने बच्चों को शुद्ध करने में वैसे ही लगातार लगी रहती हैं, जैसे कि कोई माँ लगी रहती है। इसी प्रकार यदि हम अपने कार्यों में लगातार पूर्ण समर्पण के साथ लगे रहें, तो हम भी अपनी क्षमता का पूर्ण विकास कर सकते हैं।

दुर्गा का एक अन्य रूप सर्वोच्च सत्ता की शक्ति के रूप में है, जो शिव से जुड़ी हुई है। वह शिव से अलग नहीं है। इसी प्रकार हमारी शक्तियाँ हमारे अंदर ही हैं, हमसे अलग नहीं हैं। भगवान की कुछ अन्य शक्तियाँ भी हैं, जैसे लक्ष्मी, सरस्वती, माहेश्वरी तथा अन्य कई। चूंकि आत्मतत्व सभी में एक ही है, इसलिए ये शक्तियाँ भी आत्मन् की ही हैं। योग तथा अन्य विकसित पद्धतियों द्वारा स्वयं पर समुचित नियंत्रण एवं प्रशिक्षण के द्वारा हम इन शक्तियों को जागृत करके एक उत्तम स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

हनुमान

इनके अन्य नाम हैं– हनुमान, महावीर, पवनसुत, आंजनेय, रामदूत, रामदास, केसरीनंदन तथा अन्य भी कई।

हनुमानजी को कभी एक हाथ में पर्वत धारण करके उड़ते हुए दिखाया जाता है, कभी रामजी की शरण में उनके चरणों के पास पालथी मारकर चुपचाप बैठे हुए दिखाया जाता है, तो कभी उन्हें अपना सीना चीरकर उसमें विराजमान राम और सीता को दिखाते हुए व्यक्त किया जाता है।

हनुमान हिन्दुओं के सर्वाधिक लोकप्रिय देव हैं। वे सेवा, भक्ति और समर्पण के साक्षात रूप हैं। वे शिव के अवतार हैं। उन्हें पवन एवं अंजनी देवी का पुत्र भी कहा जाता है। उभरी हुई ठुड्डियों के कारण उन्हें 'हनुमान' कहा जाता है। उनकी बंदर जैसी पूँछ है। दिखने में वे अर्द्धमानव लगते हैं, लेकिन उनके गुण ऐसे अलौकिक हैं कि हम सभी उन गुणों को स्वयं में पाना चाहेंगे। उनमें अद्‌भुत शारीरिक और आत्मिकशक्ति है, जैसे साहस एवं शौर्य (महावीर), निडरता तथा राम एवं सीता के प्रति भक्ति। उच्च प्रतिभा, सत्यवाणी, ज्ञान के सागर तथा अन्य महान गुण। उनका अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण है।

सभी खिलाड़ी और योग करने वाले व्यक्ति हनुमान को अवश्य पूजते हैं। हनुमान के हाथ में पर्वत अपने स्वामी राम के द्वारा सौंपे गये कार्य को पूर्ण करने के उनके समर्पण भाव का प्रतीक है। उनके हृदय में विराजित राम और सीता दर्शाते हैं कि वे अपने आराध्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं। रामदरबार में उनकी मुद्रा उन्हें राम के सेवक के रूप में व्यक्त करती है। यह उनकी शांति, मस्तिष्क की केन्द्रीयता और नियंत्रण तथा सत्य के प्रति उनकी निष्ठा को भी बताती है। हनुमान की तरह हमें अपने मस्तिष्क और बुद्धि को अपनी आत्मा के नियंत्रण में लाकर अपनी आत्मा की सेवा करनी चाहिए।

पवन के पुत्र के रूप में हनुमान प्राण (साँस) की शक्ति को व्यक्त करते हैं। ज्ञात हो कि साँस और मस्तिष्क दोनों परस्पर जुड़े हुए है। वे सीता (बुद्धि) का पता लगाकर उन तक पहुँचने में सफल रहे। इसका अर्थ हुआ कि शांत एवं नियंत्रित मस्तिष्क हमारे अंदर की छिपी सम्भावनाओं का पता लगा सकता है।

चालीस दोहों वाले 'हनुमानचालीसा' का पाठ करोड़ों हिन्दू प्रतिदिन करते हैं। इसमें रामायण में वर्णित हनुमान जी के गुणों एवं कार्यों का वर्णन किया गया है। इसका पाठ हमें इन गुणों को समाहित करने की याद दिलाता है–

- शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक शक्ति।
- विस्तृत ज्ञान (ज्ञान गुण सागर), सर्वोच्च विद्या।
- विनम्रता, राम (आत्मा) की सेवा।
- निडरता, निःस्वार्थता, निरभिमानिता तथा 'कुछ भी असम्भव नहीं की वृत्ति।'

लक्ष्मी

अन्य नाम– कमला।

लक्ष्मी को सामान्यतः लाल कमल पर बैठे हुए अथवा खड़ा दिखाया जाता है। वे लाल वस्त्रों में होती हैं, और उनके चारों ओर प्रचुर मात्रा में सोना–चांदी जैसी कीमती वस्तुएँ, हाथी और तेल के दीपक आदि होते हैं। उन्हें विष्णु जी के साथ दर्शाया जाता है, जहाँ वे शेषशायी विष्णु जी के पैरों के निकट बैठी होती हैं।

लक्ष्मी विष्णु जी की शक्ति हैं, जो विश्व की रक्षा करने वाले प्रमुख भगवान हैं। लक्ष्मी के कारण ही विश्व में सामंजस्य है। विश्व के पोषण के लिए जिन वस्तुओं की आवश्यता होती है, लक्ष्मी जी वे सब प्रदान करने वाली देवी हैं। वे सौन्दर्य, सामंजस्य एवं संतुलन की भी प्रमुख देवी मानी जाती हैं। लक्ष्मी की उत्पत्ति समुद्र–मंथन से मानी जाती है, जिसके एक ओर सुर थे और दूसरी ओर असुर। इसका अर्थ है कि सफलता की प्राप्ति सतत एवं कठिन प्रयासों से होती है।

लक्ष्मी लाल कमल पर विराजमान हैं। यह कमल आध्यात्मिक स्रोत का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे सभी भौतिक पदार्थों की उत्पत्ति होती है। इसका अर्थ है कि हमारी अपनी ही आंतरिक शक्तियों से हमारी समस्त क्षमताओं को सामने लाया जा सकता है। विष्णु के चरणों के पास बैठी हुई लक्ष्मी का अर्थ है कि उनकी शक्ति मुख्यतः विष्णु की शक्ति है, और उसका उपयोग उन्हीं के उद्देश्यों के लिए होना चाहिए। जिस प्रकार विष्णु अपनी शक्ति का उपयोग इस विश्व की रक्षा के लिए करते हैं, उसी प्रकार हमें भी अपनी शक्ति (धन आदि) का उपयोग विश्व की मदद के लिए करना चाहिए। सम्पत्ति का उपयोग इस विश्व के हित के लिए न करके उसका केवल संग्रह करते जाने का अर्थ है कि हम भगवान विष्णु के कार्य में अपना योगदान नहीं दे रहे है। हाथी के द्वारा अपनी सूंड में पानी को भरकर बिखेरना अकूत आलौकिक सम्पत्ति को बिखेरना ही है। इसका अर्थ है कि जब हम अपनी सम्पत्ति और क्षमता का उपयोग दूसरों तथा अलौकिक उद्देश्यों के लिए करते हैं, तो उनमें निरंतर बढ़ोतरी होती है।

नवरात्र के दिनों में देवियों कि की जाने वाली पूजा में बीच के तीन दिनों में विशेषरूप से लक्ष्मी की पूजा होती है। जब माँ दुर्गा (काली) हमारी बाधाओं (नकारात्मकता) को दूर करती हैं, तभी देवी लक्ष्मी हमें समृद्धि, सामंजस्य और संतुलन प्रदान करती हैं, और ऐसा होने पर ही हमारा मस्तिष्क, ज्ञान (सरस्वती) जैसे उच्च गुणों की ओर अग्रसर होता है।

पद्मासनस्थिता देवी, परब्रह्मस्वरूपिणी।
परमेश्वरी जगन्माता, महालक्ष्मी नमोस्तु ते।।

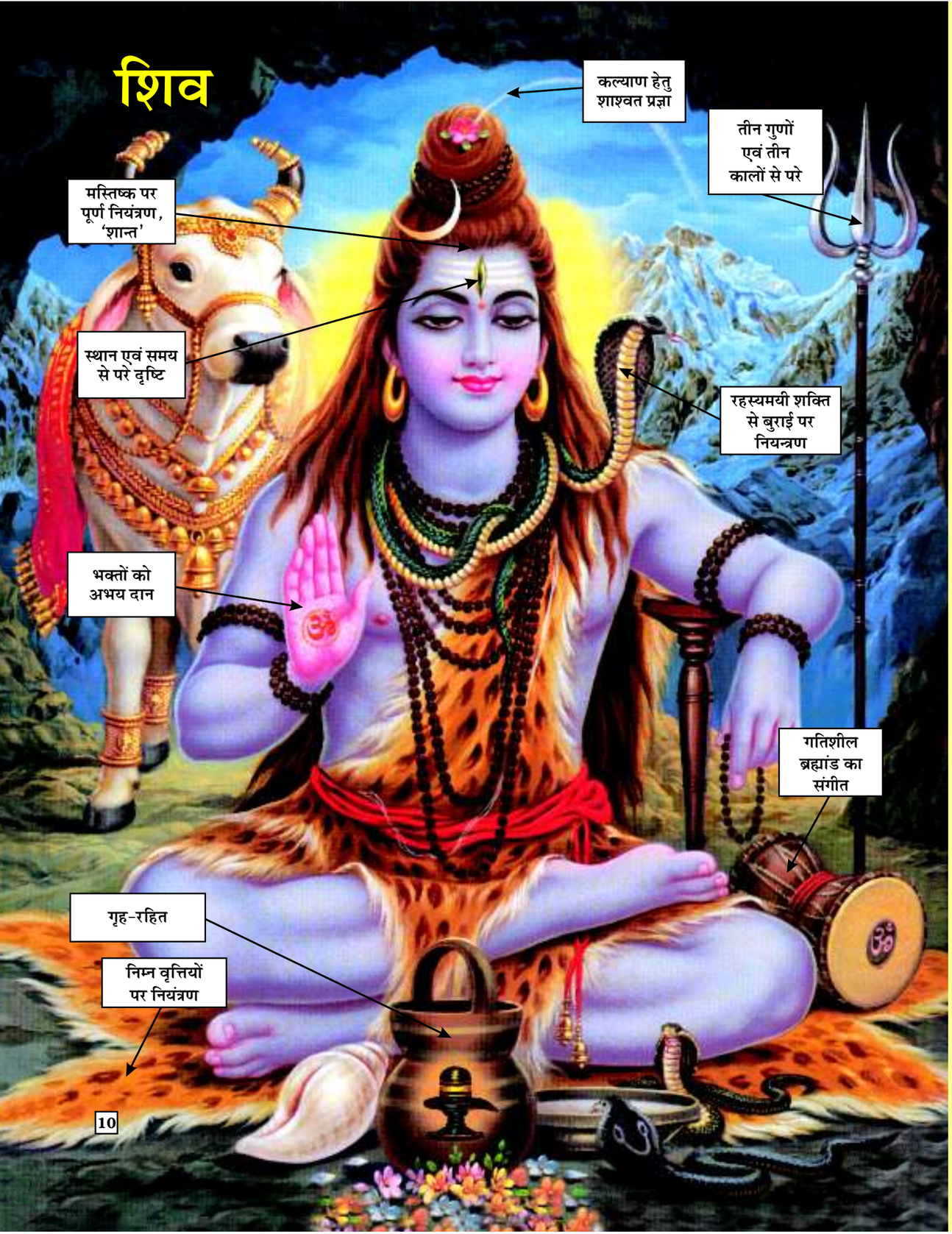

शिव

शिव के अन्य नाम हैं– महादेव, शंकर, शंभू, महेश, नीलकंठ, भोलानाथ, कैलासपति, उमापति, रुद्र, ईशान, ईश्वर तथा अन्य भी कई।

शिव के अन्य रूप हैं– शिवलिंग, नटराज, अर्द्धनारीश्वर तथा दक्षिणामूर्ति।

ब्रह्मा एवं विष्णु के साथ ही भगवान शिव इस जगत की तीन आलौकिक शक्तियों में से एक हैं। शिव का अर्थ है–कल्याणकारी। शिव विनाश के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस जगत में जो भी दृश्यमान वस्तु है, वह नश्वर है। शिव मूलतः जगत के विकास की प्रक्रिया में विनाश के कारक हैं। इसीलिए उन्हें गलती से 'विनाश का देव' भी कह दिया जाता है, यद्यपि निर्माण के लिए विनाश आवश्यक होता है। शिव को या तो ध्यान की मुद्रा में बैठे हुए दिखाया जाता है अथवा पार्वती तथा पुत्र गणेश एवं कार्तिकेय के साथ बैठे हुये जो नंदी तथा गणों से घिरे रहते हैं। शिव अत्यंत सरल एवं पवित्र देव हैं। उन्हें बहुत ही थोड़े से वस्त्र, श्रृंगार एवं वस्तुओं की जरूरत होती है। वे हिरण या चीता की खाल पहनते हैं। शरीर पर भस्म का लेप होता है। उनके लम्बे–लम्बे बाल एक गाँठ से बंधे होते हैं। उनके गले में सर्प की माला होती है, तथा उनकी भुजायें थोड़ी सजी हुई होती है। वे तप, वैराग्य और ज्ञान की प्रतिमूर्ति हैं। वे हमेशा इस ब्रह्माण्ड के हित के लिए ध्यान में डूबे रहते हैं। इन सबका अर्थ क्या है?

उनकी जटाओं से निकलने वाली गंगा चिद्शक्ति (पवित्र चेतना, प्रज्ञा) का प्रतीक है, जो स्वर्ग से धरती की ओर बहती है। वह धरती पर शिव (कल्याण) के माध्यम से आती है। प्रज्ञा का प्रवाह केवल कल्याण के माध्यम से ही सम्भव है। उनके भाल पर स्थित द्वितीया का चन्द्रमा मस्तिष्क पर पूर्ण नियंत्रण का प्रतीक है। सामान्यतः बंद रहने वाली उनकी तीसरी आँख विशुद्ध ज्ञान का अर्थ देती है, जिसके खुलते ही समस्त द्वेषभाव नष्ट हो जाते हैं। उनकी देह पर लिपटी हुई भस्म का अर्थ है–विश्व की समस्त इच्छाओं के समाप्त होने के बाद बची हुई आध्यात्मिक सम्पत्ति। उनका नीला कंठ विश्व के प्रति उनकी असीम करुणा का प्रतीक है। उन्होंने विष को पूरी तरह पीने की बजाय अपने कंठ में धारण कर लिया है।

शिव के त्रिशूल का अर्थ है कि वे तीनों गुणों (सत्व, रजस और तमस), चेतना के तीनों स्तर तथा तीनों काल (वर्तमान, भूत एवं भविष्य) से परे हैं। उनके डमरू की आवाज से एक ब्रह्माण्डीय लय स्थापित होती है। इससे इस विश्व में एक गतिक सामंजस्य और संतुलन आता है। सर्प जहाँ हमारी कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है, वहीं विषैले जीव का भी। शिव पर इस विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। नन्दी शिव का वाहन है। यह धर्म के साथ–साथ आनंद का भी अर्थ लिये हुए है। चीते की खाल अहंकार की समाप्ति तथा दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण का प्रतीक है।

दक्षिणामूर्ति के रूप में शिव विश्व गुरू हैं, जो अपने मौन में विश्व को ज्ञान देते हैं। नृत्य करते हुए शिव (नटराज) के रूप में ब्रह्माण्ड के नियम का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो लगातार गति में होने के बावजूद संतुलन से बाहर नहीं हैं। अर्द्धनारीश्वर के रूप में शिव इस विश्व की रचना के लिए नारी एवं पुरुष के परस्पर समान सहयोग का संदेश देते हैं। लिंग के रूप में शिव पूरी तरह स्वयं में ही लीन एक निराकार एवं जीवन के अंतिम सत्य को रूपायित करते हैं। भारत में कुल बारह ज्योर्तिलिंग हैं।

एक पुरानी कहावत है जो शिव का ध्यान करते हैं वे स्वयं शिव हो जाते हैं। 'शिवमानसपूजा' के प्रसिद्ध श्लोक में स्पष्ट रूप से कहा गया है "मेरी आस्था शिव है, मेरी पवित्र बुद्धि पार्वती है, मेरे प्राण गण हैं, और मेरी देह शिव की देह है.... इसलिये मैं जो कुछ भी करता हूँ, वह शिव की पूजा को (मेरी अपनी आत्मा) अर्पित है।" यदि हम शिव की प्रतिमा के सच्चे अर्थ को समझ लेते हैं, तो यह हमारी उन्नति के लिए एक महान प्रेरणा का स्रोत बन जाता है।

सरस्वती

इनके अन्य नाम है– शारदा, वीणाधारिणी, वागेश्वरी आदि।

सरस्वती सामन्यतः कमल पर विराजित होती हैं। उनके हाथ में वीणा होती है। वे श्वेत वस्त्र धारण करती हैं और उनका वाहन भी श्वेत हँस होता है।

सरस्वती का शाब्दिक अर्थ है–वह, जो सत्व का सार देता है। वे आध्यात्मिक ज्ञान एवं प्रज्ञा की देवी हैं। वे विश्व के निर्माणकर्ता ब्रह्मा की शक्ति हैं, जिन्होंने ब्रह्माण्ड की रचना के लिए उनको ज्ञान दिया। इनकी ही कृपा से हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है, और हम कला में पारंगत होते हैं। सरस्वती हमारी बुद्धि एवं वाणी के माध्यम से व्यक्त होती हैं। उनके धवल वस्त्र पवित्रता के प्रतीक हैं, क्योंकि ज्ञान को भ्रमरहित और स्पष्ट होना चाहिए। वीणा आनंद एवं सामंजस्य का प्रतीक है, जो ज्ञान एवं प्रज्ञा से प्राप्त होता है। श्वेत हँस भेदरहित ज्ञान का प्रतीक है, जो सार–सार को ग्रहण करता है एवं थोथे को छोड़ देता है। (माना जाता है कि हँस में दूध से पानी को अलग करने की क्षमता होती है)। मोर विशुद्ध सौन्दर्य का प्रतीक है, जो प्रज्ञा में निहित होता है। आसन के रूप में खिला हुआ कमल चिद् शक्ति (पवित्र चेतना) का प्रतिनिधित्व करता है, जो सभी ज्ञान का उद्गम स्रोत है। सरस्वती की चार भुजायें हमारे चरित्र के चार पक्ष–मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त के प्रतीक हैं। इन सभी प्रतीकों का अर्थ है कि प्रज्ञा के रूप में सरस्वती का निवास हमारे अन्दर ही है, जो सुप्तावस्था में रहती है, और जब एक बार हमारा मस्तिष्क संवाद करना और उत्तेजित होना बंद कर देता है, तब वह शांत और संतोषप्रद हो जाता है। ऐसी स्थिति में जब हमारी विशुद्ध बुद्धि(हमारे अंतःकरण में स्थित हमारी प्रज्ञा) स्वयं को कोमल किंतु दृढ़ स्वर में व्यक्त करना शुरु कर देती है, तब भ्रम समाप्त हो जाते हैं, और केवल स्पष्टता ही शेष रहती है।

सरस्वती की पूजा एवं प्रार्थना सभी करते हैं। बच्चे पढ़ाई शुरु करने से पहले उनकी प्रार्थना करते है तथा वे लोग भी उनका आशीर्वाद लेते हैं, जो आगे बढ़ना चाहते हैं।

नवरात्रि के नौ दिनों के अंतिम तीन दिन सरस्वती की आराधना होती है। जब दुर्गा (काली) हमारी सभी बाधाओं (नकारात्मकता) को दूर कर देती हैं, तब लक्ष्मी हमारे भौतिक जीवन में सामंजस्य और संतुलन लाती है। इसके बाद ही हमारा मस्तिष्क प्रज्ञा (सरस्वती) की प्राप्ति के लिए अग्रसर होता है।

सरस्वती नमस्तुभ्यम् वरदे कामरूपिणी।
विद्यारंभम् करिष्यामी, सिद्धिर्भवतु मे सदा।।

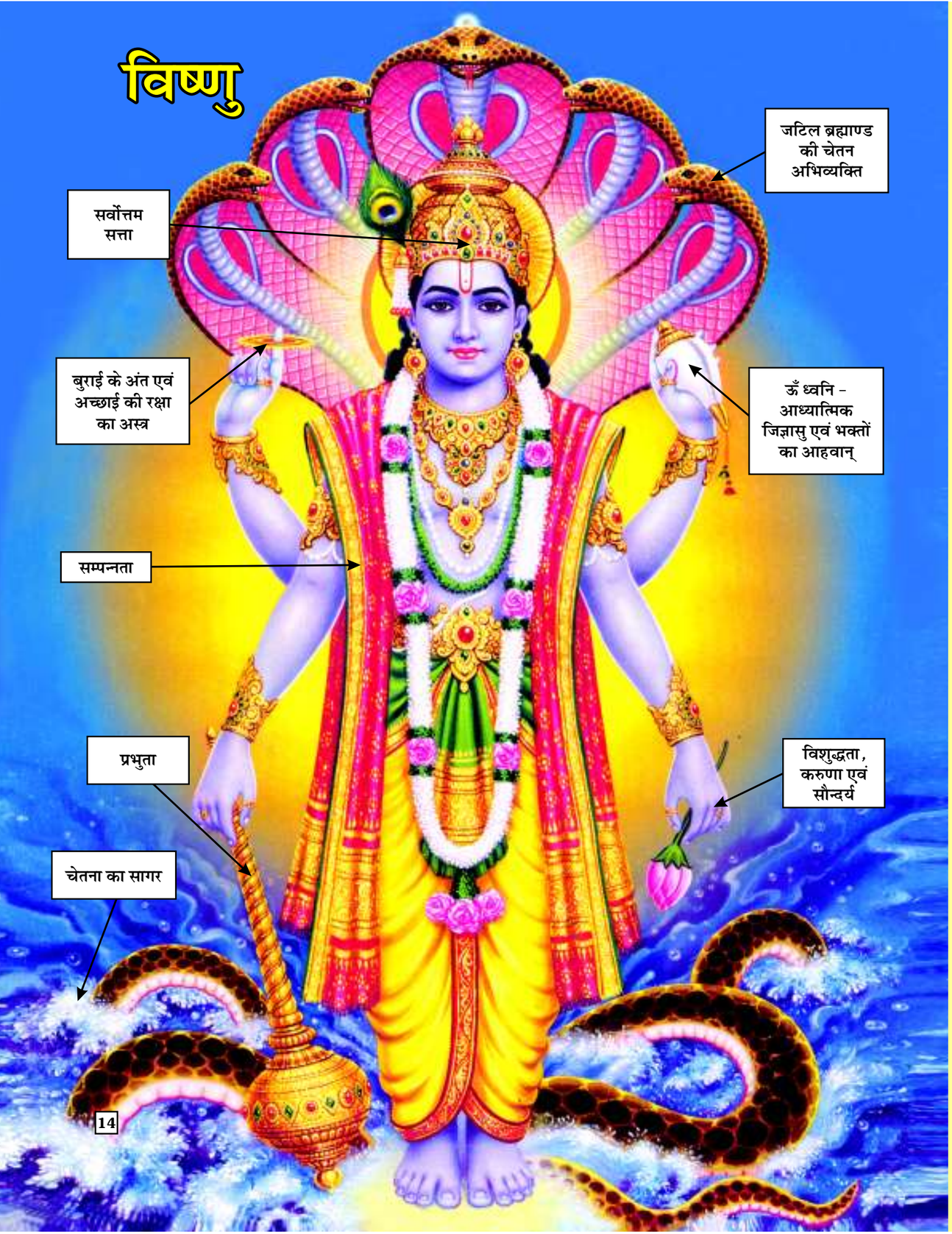

विष्णु

विष्णु के अन्य नाम हैं– नारायण, राम, कृष्ण, विश्वेश्वर, बालाजी, लक्ष्मीपति, शेषशायी, सत्यनारायण, लक्ष्मीनारायण तथा अन्य। विष्णु के कई रूप हैं। चूंकि विष्णु ने राम और कृष्ण आदि रूपों मे अनेक अवतार लिये हैं, इसलिए उनके रूप भी कई हैं। उन्हें शेषनाग पर लक्ष्मी के साथ क्षीरसागर में शयन किये हुए भी दर्शाया जाता है।

विष्णु ब्रह्माण्ड के तीन ईश्वरों में से एक हैं। विष्णु इस ब्रह्माण्ड का पोषण करने वाले भगवान हैं। इस ब्रह्माण्ड में पहले पदार्थ बनते हैं, फिर उनका विकास होता है, और अंत में वे नष्ट हो जाते हैं। यह सत्य है। कोई भी इस नियम से परे नहीं है। यह नियम केवल पदार्थों पर ही लागू नहीं होता, अपितु जीवों, विचारों और घटनाओं पर भी लागू होता है। विष्णु के कारण ही पदार्थों का अस्तित्व सम्भव हो पाता है। लक्ष्मी या प्रकृति उनकी शक्ति है।

चूंकि विष्णु इस ब्रह्माण्ड के पालनहार हैं, इसलिए शुभ की वृद्धि तथा अशुभ का विनाश करने के लिए जब भी आवश्यकता होती है, वे अवतार लेते हैं। इस प्रकार वे संतुलन को पुनः स्थापित करते हैं। जो लोग धर्म (शाश्वत मूल्यों) का पालन करते हैं, वे भी विष्णु के समान ही काम कर रहे हैं। राम और कृष्ण इनके सबसे लोकप्रिय अवतार हैं, जिनकी हिन्दू पूजा करते हैं। जैसा कि 'रामचरितमानस' में वर्णित है, राम ने अपने कार्यों से एक आदर्श–मानव का उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार उन्होंने भौतिक जगत में रहते हुए अलौकिक प्रेम एवं ईश्वरीय समर्पण का आदर्श प्रस्तुत किया है। इन अवतारों के चरित्र को ध्यान से पढ़ एवं समझकर इनका अनुकरण करते हुए हम भौतिक जगत में रहते हुए भी ईश्वरीय जीवन जी सकते हैं।

विष्णु शेषनाग पर लेटे हुए है, तथा क्षीर–सागर में है। सागर जहाँ अनंतता एवं सुषुप्त चेतना का प्रतीक है, वहीं नाग कार्यशील एवं जागृत चेतना का। इसका अर्थ है कि हमारे अंदर असीम शक्ति छिपी हुई है, और उसका एक छोटा सा अंश ही विचारों के रूप में उस समय सामने आता है, जब हम इस भौतिक जगत में व्यवहार करते हैं। विष्णु के हाथ के अस्त्र रक्षा का तथा कमल हममें निहित पवित्रता एवं गुणों का प्रतीक है। इनके मुकुट, गदा एवं साज–श्रृंगार उनके ऐश्वर्यमय स्वरूप को व्यक्त करते हैं। इसका अर्थ है कि हम सभी राजा के समान हैं, जिसके पास सम्पत्ति और शक्ति होती है। शंख 'ऊँ' (शाश्वत आनंद) की ध्वनि का प्रतीक है।

विष्णु के चरणों के निकट बैठी लक्ष्मी का अर्थ है कि समस्त सम्पत्ति मूलतः अलौकिक सत्ता की है और उसका उपयोग इस ब्रह्माण्ड के पोषण एवं रक्षा के लिए होना चाहिए। लक्ष्मी हमेशा विष्णु के साथ होती हैं, जिसका अर्थ है कि सम्पत्ति उसी के पास होती है, जो अच्छे कार्यों में लगे रहते हैं। अन्य सभी सम्पत्तियाँ अस्थिर हैं।

'विष्णुसहस्रनाम' भगवान विष्णु के हजार नामों का संग्रह है। उनका प्रत्येक नाम एक अलौकिक शक्ति का अर्थ देता है। कई भक्तगण इनका प्रतिदिन जप करते हैं, ताकि वे गुण उनमें भी आ सकें।

लक्ष्मी एवं विष्णु की प्रतिमा का अत्यंत महान प्रतीक अर्थ है। इससे उन सभी लोगों को संदेश मिलता है, जो भौतिक समृद्धि, आनंद और सामंजस्य के साथ–साथ एक आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं।

राम दरबार

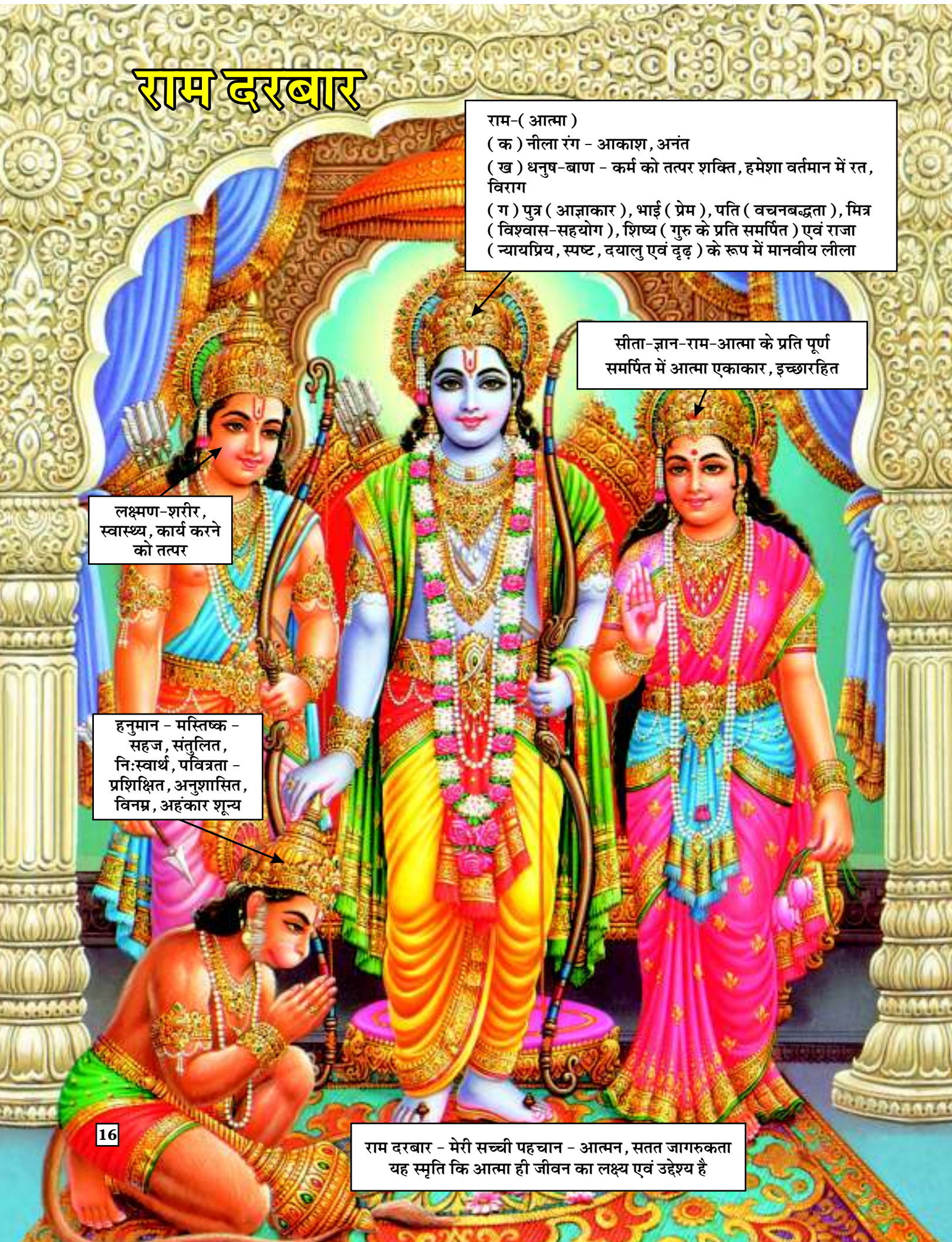

राम-(आत्मा)
(क) नीला रंग - आकाश, अनंत
(ख) धनुष-बाण - कर्म को तत्पर शक्ति, हमेशा वर्तमान में रत, विराग
(ग) पुत्र (आज्ञाकार), भाई (प्रेम), पति (वचनबद्धता), मित्र (विश्वास-सहयोग), शिष्य (गुरु के प्रति समर्पित) एवं राजा (न्यायप्रिय, स्पष्ट, दयालु एवं दृढ़) के रूप में मानवीय लीला

सीता-ज्ञान-राम-आत्मा के प्रति पूर्ण समर्पित में आत्मा एकाकार, इच्छारहित

लक्ष्मण-शरीर, स्वास्थ्य, कार्य करने को तत्पर

हनुमान - मस्तिष्क - सहज, संतुलित, नि:स्वार्थ, पवित्रता - प्रशिक्षित, अनुशासित, विनम्र, अहंकार शून्य

राम दरबार - मेरी सच्ची पहचान - आत्मन, सतत जागरुकता यह स्मृति कि आत्मा ही जीवन का लक्ष्य एवं उद्देश्य है

राधा कृष्ण

कृष्ण-नीला अर्थात् अनंत, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान - सभी जीवों में व्याप्त, तथा पदार्थ एवं शरीर से परे

मोरपंख-आनंदित नृत्य, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं प्रकृति के आनन्द का प्रतीक

बाँसुरी (शरीर) - पदार्थों से आत्मा के संगीत की उत्पत्ति, जादुई संगीत, कृष्ण द्वारा बजाये जाने पर जीवन का संचार

राधा-कामना एवं कृष्ण के प्रति सघन एवं निःशर्त प्रेम और प्यास की प्रतीक। भौतिक जगत में रहते हुए भी निरंतर कृष्ण का स्मरण करने की प्रतीक

राधा एवं कृष्ण का प्रेम - भक्त का शाश्वत प्रेम, कृष्ण के लिए उत्कर कामना तथा प्रकृति एवं ब्रह्म की लीला के प्रतीक

गाय - माँ जैसी सेवा। दूध, मिष्ठान, चीज़, दही, घी, आइसक्रीम तथा मूत्र एवं गोबर आदि वस्तुएँ भी उपयोगी। कृष्ण द्वारा गायों को चराना इस भौतिक जगत में व्यवहार करते हुए अपनी समस्त इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने का प्रतीक है

कृष्ण-सत्, चिद्, आनन्द। खुशी, आनन्द, पूर्णता एवं ब्रह्मानन्द के साकार रूप

EKAL VIDYALAYA

A PEOPLE'S MOVEMENT

www.ekal.org

- Ekal oversees over 34,000 schools in almost every state in India.

- Your $365 donation supports an Ekal school for the entire year.

- How about sponsoring a school in the name of your child or parents?

Cornerstones of Ekal

- Primary Education
- Basic Health & Hygiene Education
- Economic Development Education
- Social Empowerment Education

Ekal Vidyalaya Foundation of USA
3908 Westhollow Parkway, Houston, TX 77082
Phone: 281-668-5982 Fax: 281-668-5251
Email: ekalusa@ekalvidya.org

New Delhi Office
Smt. Sangita Gupta, sangitaagupta@gmail.com
Phone: 011-26383885, 40503331 Fax: 011-40503332
Email: ftsdelhi@gmail.com, ekalvidyalaya@gmail.com

Ekal Vidyalaya Foundation of USA is a 501 (c) (3) charitable organization - Tax ID 77-0554248

Join Hindu University of America!

Enrich yourself!
Turn your knowledge of yoga from fundamental to phenomenal!
Earn your master's/doctoral degree in Yoga Education, Yoga Philosophy and Meditation, Ayurvedic Sciences, Vedic Astrology, Hindu Philosophy, Hinduism, and Sri Aurobindo Studies.
Or just take courses of your choice and expand your horizon.

Visit www.hua.edu and learn about this unique institution

Join on-line programs at HUA, or join one of the Extension Centers in India for In-class learning. www.svyasa.org www.paramyoga.org

HINDU UNIVERSITY OF AMERICA

॥सा विद्या या विमुक्तये॥

HINDU UNIVERSITY OF AMERICA, Inc.
113 S. Econlockhatchee Trail
ORLANDO, FLORIDA, 32819, USA
www.hua.edu staff@hua.edu
Phone: (407) 275-0013